५. संतवाणी

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे ।
मैं तो मेरे नारायण की अपहिं हो गइ दासी रे ।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे ।।
बिष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे ।।

दरस बिन दूखण लागे नैन ।
जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहुँ न पायो चैन ।।
सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै मीठे लागे बैन ।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी बह गई करवत ऐन ।।
कल न परत पल-पल मग जोवत भई छमासी रैन ।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे दुख मेटण सुख दैन ।।

संत मीराबाई

× × ×

पुरतें निकसीं रघुबीर बधू,
धरि धीर दए मग में डग द्वै ।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी,
पुट सूखि गए मधुराधर वै ।
फिरि बूझति हैं, चलनो अब केतिक,
पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै ?
तियकी लखि आतुरता पिय की,
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ।।

जल को गए लक्खन, हैं लरिका,
परिखौ, पिय ! छाँह घरीक है ठाढ़े ।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,
अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ।।
'तुलसी' रघुबीर प्रिया श्रम जानि कै,
बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े ।
जानकी नाह को नेहु लख्यो,
पुलक्यो तनु, बारि बिलोचन बाढ़े ।।

गोस्वामी तुलसीदास

– संत मीराबाई
– गोस्वामी तुलसीदास

परिचय

जन्म : १४९८, चौकड़ी ग्राम (राजस्थान)
मृत्यु : १५४६, द्वारिका (गुजरात)
परिचय : मीराबाई बचपन से ही भगवान कृष्ण के प्रति अनुरक्त थीं । आप साधुओं के साथ कीर्तन-भजन करती थीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'राम गोविंद', 'राग सोरठा के पद', 'गीतगोविंद' 'मीरा पदावली' आदि ।

× × ×

जन्म : १५११, एटा (उ.प्र.)
मृत्यु : १६२३, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : तुलसीदास जी का मूल नाम 'रामबोला' था । आप द्वारा रचित 'रामचरितमानस' महाकाव्य विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'दोहावली', 'कवितावली' आदि ।

पद्य संबंधी

संत मीराबाई – प्रस्तुत पद में संत मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन किया है । अपने प्रभु को मिलने की जो आस मीरा के हृदय में है उसी का सुंदर वर्णन पदों में किया है ।

गोस्वामी तुलसीदास– प्रस्तुत पद 'कवितावली' से लिए गए हैं । यहाँ सीता जी की थकान, श्रीराम की व्याकुलता, शरीर सौष्ठव का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है ।

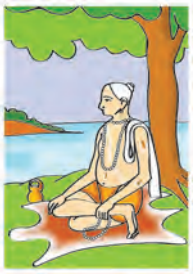

शब्द वाटिका

बावरी = पागल
पग = पैर
सबद = शब्द
निकसीं = निकली
डग = कदम
छमासी = छह महीने
अविनासी = कभी भी नष्ट न होने वाला
भाल = माथा
चारु = सुंदर
लरिका = लड़का, बालक
परिखौ = इंतजार करना, राह देखना
पसेउ = पसीना

❊ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

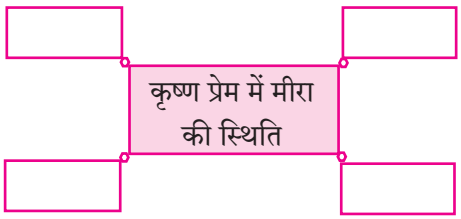

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

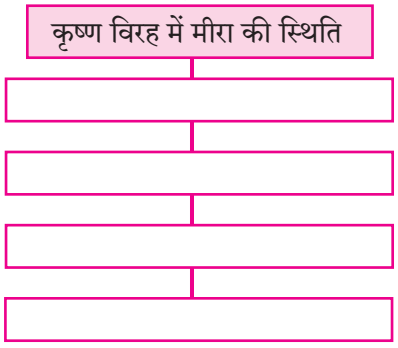

(३) संजाल पूर्ण करो :

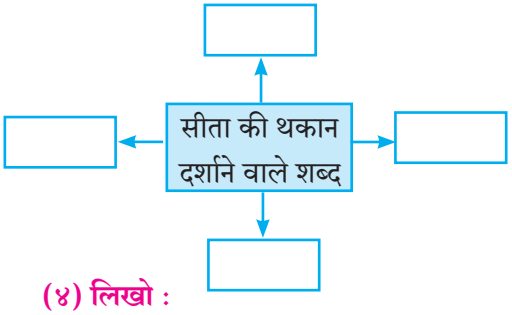

(४) लिखो :

पद्यांश में आए इस अर्थवाले शब्द

१. नयन –
२. काँटा –
३. सुंदर –
४. शरीर –

(५) पद की दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो ।

भाषा बिंदु

अ) दूसरी इकाई के गद्यपाठों में आए दस-दस स्त्रीलिंग, पुल्लिंग शब्दों की सूची बनाकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

आ) पाठों में प्रयुक्त दस मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

अंतरशालेय नाट्यस्पर्धा में नाटक का मंचन करने हेतु रंगभूषा भंडार के व्यवस्थापक को पात्रों के अनुरूप आवश्यक वेशभूषाओं की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

महाराष्ट्र के किन्हीं दो संतों की सचित्र जानकारी प्राप्त करो ।

'वृक्ष हैं मेरे हाथ, मत काटो इसे' धरती के मन के इस भाव को अपने शब्दों में लिखो ।

कल्पना पल्लवन

I6R2ZL